डा0 रा0म0लो0 अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
निःशुल्क प्रकाशनार्थ (दिनांक 16.09.2017)

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

आज दिनांक 16 सितम्बर 2017 को डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के कौटिल्य प्रशासनिक भवन के सभागार में माननीय मुकुल कानितकर, संगठन मंत्री, राष्ट्रीय शिक्षण मण्डल का विश्वविद्यालय में पंजीकृत शोध छात्रों से सीधे संवाद का आयोजन किया गया। जिसमें सर्वप्रथम मुख्य अतिथि माननीय मुकुल कानितकर जी का कुलपति जी द्वारा पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि एवं कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित तथा विभागाध्यक्ष प्रो0 अजय प्रताप सिंह द्वारा मॉ सरस्वती की प्रतिमा एवं भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्जवलन किया गया। कुलपति महोदय ने अतिथीय स्वागत सम्बोधन में माननीय मुकुल कानितकर का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि आपने कई पुस्तकों का लेखन किया है, जिसमें प्रमुख रूप सेः परीक्षा दें हंसते–हंसते, शिक्षक स्वाध्याय, शोध परिकल्पना, संगठन बढे चलो, परिवार बचाओ देश बचाओ आदि हैं। इसके साथ ही आपने अभी तक 2350 कार्यशाला/आनन्द शालाओं में प्रतिभाग किया है तथा कई बिन्दुओं पर लगभग 7500 व्याख्यानों को सम्बोधित किया है, साथ ही आपके 2150 से अधिक शोध पत्र विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीय/अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हो चुके हैं। कुलपति प्रो0 दीक्षित ने अपने सम्बोधन में कहा कि ऐसी महान विभूति का अवध विश्वविद्यालय में पदार्पण हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

मुख्य अतिथि माननीय मुकुल कानितकर जी ने शोध छात्रों से सीधे संवाद करते हुए कहा कि शोधकर्ताओं को सर्वप्रथम स्वयं की खोज का प्रयास करना चाहिए। उन्होनें उदाहरण देते हुए बताया कि जब आप दपर्ण में अपने आप को देखते हो तो आपकी आखें आप में कुछ खोजती हैं, और आपसे स्वयं आपके विषय में सवाल पूछती हैं कि आप कौन हो? आपका जन्म किस लिए हुआ है? आपके जीवन का लक्ष्य क्या है? जो व्यक्ति इन प्रश्नों के उत्तर को अपनें में आत्मसात् कर लेता है वो ही आगे चलकर महापुरूष बनता है। उन्होंने कहा कि शोध के अर्न्तगत जिस तरह से एक छोटा बालक अपनी समस्त इन्द्रियों के माध्यम से सब कुछ देखना, सीखना और समझना चाहता है, ठीक उसी तरह से शोध छात्र एवं छात्राओं को भी अपनी समस्त इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखकर सही दिशा में सकारात्मक प्रयास करना होगा, शोध का उद्देश्य हमेशा ज्ञान प्राप्ति ही होना चाहिए अन्यथा ज्ञान समाप्त होते ही शोध की व्यापकता समाप्त हो जाती है। उन्होंने यह भी कहा कि शोध कार्य से आपको जीवन में सब कुछ मिल सकता है, इसलिए केवल डिग्री मात्र के लिए शोध करना बेमानी है। शोध के अन्तर्गत वर्तमान समय में बौद्विक चोरी का प्रचलन बडी तेजी से बढा है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कापी, कट, पेस्ट की प्रथा भारत में प्रचलित है और पूरे विश्व में भारत इस क्रिया में पहले स्थान पर है। ऐसा इसलिए है कि हम स्वयं अपने आप से ही निष्ठावान नही हैं। वर्तमान पीढी पद, प्रतिष्ठा और पैसे के पीछे भाग रही है एवं जीवन के नैतिक मूल्यों को भूल रही है। उन्होनें बताया कि उपनिषदों में 13 प्रकार की शोध प्रविधि बताई गयी है, साथ ही उन्होनें कहा कि शोध संक्षेपिका से लेकर शोध के उद्देश्य, अनुक्रमणिका, शोध प्रविधि, शोध परिकल्पना तथा शोध निष्कर्ष में बहुत ही क्रान्तिपरक बदलाव की आवश्यकता है। उन्होंने शोध छात्रों को बताया कि शोध एवं अनुसंधान स्वयं के आनन्द के लिए करना चाहिए जब आप शोध को स्वयं के लिए करेगें तभी आप शोध के उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं। सतत् चलते रहना अधिक से अधिक काम करना ही शोधार्थियों का लक्ष्य होना चाहिए। अन्त में शोध छात्रों का आह्वाहन करते हुए उन्होंने कहा कि आप सभी से निवेदन है कि शोध की अर्थी उठाने वाले शोधार्थी बनने के बजाय आपका शोध राष्ट्र के पुनरूत्थान के लिए होना चाहिए।

कार्यक्रम के अन्त में इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 अजय प्रताप सिह ने आये हुए सभी अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि कुलपति जी की ऊर्जा से हम सब को बल मिलता है और आपकी ही प्रेरणा से विश्वविद्यालय में प्रायः ऐसे कार्यक्रम लगातार आयोजित हो रहे हैं। उन्होंने मुख्य अतिथि को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि आज शोध छात्रों के साथ ही हम सभी शिक्षकों को भी आपसे बहुत कुछ सीखने को मिला।

कार्यक्रम का संचालन डॉ0 राजेश कुमार सिंह ने किया तथा कार्यकम्र मे मुख्य रूप में संकायाध्य क्ष कला संकाय प्रो0 आलोक मणि त्रिपाठी, प्रो0 जसवन्त सिंह, डॉ0 दिवाकर त्रिपाठी, डॉ0 मृदुला पाण्डेय, डॉ0 राना रोहित सिह, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 संजय चौधरी, डॉ0 मुकेश वर्मा तथा डॉ0 आदित्य प्रकाश सिंह आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में कुलगीत एवं स्वागत गीत विभागीय छात्रा अनुराधा, ज्योति, आकांक्षा, एकता, माया मौर्या एवं शालिनी पाण्डेय ने प्रस्तुत किया।

(प्रो0 अजय प्रताप सिंह)
विभागाध्यक्ष
इतिहास, संस्कृति एवं
पुरातत्व विभाग